ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 3 | Issue 11 | November 2025
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i11.200

जंभवाणी में गुरु जंभेश्वर जी के आत्मविषयक कथन

डॉ. छाया रानी

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, दयानन्द आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, मुरादाबाद

Email Id: chayarani1969@gmail.com

सारांश

पंद्रहवीं सोलहवीं शताब्दी का संधि काल भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग है। उस समय में अनेकों महापुरुष अवतरित हुए, जिनके दिव्य ज्ञान व उपदेश से नयी चेतना भारतीय जनमानस में आयी। इसीलिए इस काल को सतयुग भी कह सकते हैं। इस समय धर्म और कर्म दोनों ही विनाश के कगार पर जा पहुंचे थे जिससे सारा वातावरण ही भयावह हो गया था। तब परमपिता परमात्मा अपनी प्रतिज्ञानुसार 'प्रहलादा सूं वाचा कीवी ,आयो बारां काजै। बारां में सूं एक घटै तो सूचेलो गुरु लाजै।'गुरु महाराज ने बताया मैंने सतयुग में नृसिंह रूप धारण करके हिरिणयकश्यपू को मारा था। उस समय प्रहलाद को मैंने वचन दिया था कि तुम्हारे साथ में तैंतीस करोड़ अनुयायियों का उद्धार करूंगा, इसीलिए मुझे यहां आना पड़ा है। यह कार्य पूर्ण हो जाने के बाद मैं शीघ्र ही वापस चला जाऊंगा। 'बारा थाप घणां न ठाहर।'

सतयुग व द्वापर युग के वचन एक साथ निभाने के लिए गुरु जंभेश्वर जी ने अवतार लिया तभी उन्होंने कहा 'न मेरे माय न मेरे बाप, म्हे अपनी काया आप सवारी।' अखंड सच्चिदानंद परब्रह्म परमात्मा नित्य एक रस रहने वाले शुद्ध स्वरूप के न तो कोई माता है न ही कोई पिता या कुटुंब परिवार ही है, किंतु जब भी जैसी आवश्यकता पड़ती है उसी के अनुसार वह अपनी नवीन काया का निर्माण स्वयं कर लेते हैं। अर्थात जैसा चाहते हैं उसी रूप में प्रकट हो जाते हैं। जैसा कि गीता आदि शास्त्रों में कहा है 'परमात्मा अपनी माया द्वारा सृष्टि की रचना करता है सांसारिक प्राणी तो माया के अधीन है किंतु वह त्रिगुणात्मिका माया परमात्मा के अधीन है। वैसे तो परमात्मा का स्वरूप अज, अव्यय, निराकार ,निर्गुण आदि विशेषताओं से युक्त हैं।.

मुख्य शब्द: आत्मविषयक कथन, प्रहलाद, अमर, कुण जाणै म्हे, बारां, आद।

परिचय

अवतार किस रूप में कैसा हो इसके लिए कोई नियम नहीं है। कभी मच्छ ,कच्छ, वराह, नृसिंह ,राम ,कृष्ण ,बुद्ध आदि रूपों में परमात्मा स्वयं आते हैं। उनके लिए शरीर ,देश काल का कोई महत्व नहीं है। अपनी माया द्वारा वह जैसा चाहे वैसा रूप बना लेते हैं।१

गुरु जंभेश्वर जी का अवतार संवत 1508 में नागौर जिले के पीपासर गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम लोहट जी तथा माता का नाम हंसा था। जंभेश्वर जी को हम गुरु, संत, महाराज , विष्णुअवतार आदि नामों से जानते हैं।गुरु महाराज बिश्नोई पंथ के संस्थापक और पर्यावरण प्रेमी थे।वह आजीवन सन्यासी रहे, उन्होंने लोगों को सदैव अच्छे कर्म करने व सदमार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

गुरु जंभेश्वर जी के आत्मविषयक कथन:-

प्राय सभी सांसारिक जीव माया की छाया में ही रहते हुए अपना जीवन व्यतीत करते हैं, इसलिए उनको सत्य असत्य का विवेक नहीं हो पाता।अपने विषय में गुरु जंभेश्वर जी कहते हैं-

ओउम् मोरे छाया न माया, लोहू न मासूं। रक्तूं न धातूं, मोरे माय न बापूं।

है उद्धरण! मेरे इस शुद्ध स्वरूप में न तो माया है और न माया की अज्ञान रूपी छाया ही है अर्थात अन्य लोगों की भांति मैं मायाच्छादित नहीं हूं। मेरे इस शुद्ध स्वरूप चैतन्य आत्मा में पंचभौतिक शरीर की भांति लहू, मांस, रक्त और धातु नहीं है। इस निर्गुण निराकार सच्चिदानंद स्वरूप आत्मा के न तो कोई माता है और न ही कोई पिता हैं।

मोरी आद न जाणत ,महीयल धूंवा बखाणत, उरध ढांकले तृसूलूं।

हे उद्धरण! मुझ शुद्ध स्वरूप परमात्मा का आदि कोई नहीं जानता, क्योंकि जब वह आदि स्वरूप में स्थित था तब तो सृष्टि की उत्पत्ति भी नहीं थी तब इस सृष्टि का मानव परमात्मा के प्रथम स्वरूप को कैसे जान सकेगा?किंतु अनुमान के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है ।जैसे पर्वत पर धुआं निकलता हुआ देखकर अग्नि का अनुमान किया जाता है। उसी प्रकार जगत के कारण स्वरूप परमात्मा का अनुमान मात्र ही होता है।

आद अनाद तो हम रचीलो, हमें सिरजीलो सै कौण

अर्थात यह वर्तमान तथा इससे पूर्व सृष्टि की रचना तो परमात्मा स्वरुप मैं ही की है तब प्रश्न उठता है कि परमात्मा की रचना करने वाला भी तो कोई होगा? इसलिए गुरु महाराज कहते हैं कि हमारा सृजन करने वाला कोई भी नहीं है। अपना सृजन करने वाले हम स्वयं ही हैं।२

म्हे जोगी के भोगी कै अल्प अहारी, ज्ञानी कै ध्यानी कै निज कर्मधारी।

सोखी के पोखी, कै जल बिंबधारी, दया धर्म थापले निज बाला ब्रह्मचारी।

हमारे जैसे अवतारी पुरुष योगी हैं या भोगी हैं अथवा थोड़ा आहार करने वाले हैं या हम ज्ञानी हैं अथवा ध्यान करने वाले ध्यानी तथा स्वकीय कर्तव्य धर्म का पालन करने वाले हैं। हम स्वयं किसी का शोषण करने वाले हैं या जल में प्रतिबिंब रूप है या स्वयं सूर्य सृदश बिंब रूप है। मैं क्या हूं? इसकी चिंता तुम छोड़ो। परमात्मा अवतार धारण किस रूप में करते हैं, इसका कोई निश्चय नहीं है यहां पर तुम मुझे दया, धर्मकी स्थापना करने वाले बाल ब्रह्मचारी रूप में ही समझो।३

गुरु जंभेश्वर जी शब्द संख्या 5 में बताते हैं-

नव अवतार नमो नारायण, तेपण रूप हमारा थीयूं।

अर्थात परम सत्तावान भगवान विष्णु के ही नौ अवतार हुए हैं ।यह नव अवतार मच्छ, कच्छ, वाराह, नृसिंह , वामन , परशुराम ,राम-लक्ष्मण कृष्ण तथा बुद्ध इत्यादि। यह नव अवतार ही नमन करने योग्य हैं। इनके अतिरिक्त अन्य जन्मे जीव उपास्य नहीं है तथा यह नव अवतार ही श्री जांभोजी कहते हैं मेरे ही रूप हैं ।देश काल शरीर से भिन्न होते हुए भी तत्व रूप से तो मैं और नव अवतार एक ही हैं।४

ओउम् मोरा उपख्यान वेदूं,कण तत भेदूं। शास्त्रे पुस्तके लिखणा न जाइ। मेरा शब्द खोजो, ज्यूं शब्दे शब्द समाई।

शब्द संख्या 14 में गुरु महाराज ने कहा-हे जाट! मेरे मुख से निकले हुए शब्द ही सत्य से साक्षात्कार कराने वाले होने से वेद ही हैं तथा सार तत्व रूप परमेश्वर का भेद बताने वाले हैं। इन शब्दों को अन्य शास्त्र पुस्तकों से यदि आप प्रमाणित करना चाहेंगे तो तुम्हें प्रमाण नहीं मिल सकेगा। मेरे शब्दों को जानने के लिए बाह्य खोज न करते हुए मेरे शब्दों को ही खोजो।जिस प्रकार से शब्द रूप ब्रह्म से निकला हुआ शब्द पुनः शब्द ब्रह्म में लीन हो जाता है उसी प्रकार शब्दों में लीन होकर अर्थ रूप कण तत्व की खोज करो। यहां शब्दों को ही वेद

बताया गया है। वेद का अर्थ ज्ञान होता है तथा वेद हम उस शास्त्र को कहते हैं जो सृष्टि के आदि में सर्वप्रथम रचा गया तथा अन्य किसी शास्त्र से प्रमाणित न किया हो।५

शब्द संख्या 19 में गुरु जंभेश्वर जी अपने विषय में कहते हैं-

ओउम् रूप अरूप रमू पिंडे ब्रह्मंडे ,घट घट अघट रहायों। अनंत जुगां मैं अमर भणी जूं, ना मेरे पिता ना मायों।

ना मेरे माया न छाया ,रूप न रेखा। बाहर भीतर अगम अलेखा।

साकार, निराकार अवस्था में मैं पिंड अथवा ब्रह्मांड में सर्व व्यापक हूं तथा कण-कण में दृष्ट रूप या अदृश्य रूप में रहता हूं अर्थात ऐसा कोई स्थान नहीं जहां मैं नहीं हूं। यानी सारे ब्रह्मांड में ही मेरा स्वरूप समाया हुआ है।

अनंत युगों से मैं अजर -अमर हूं मेरे ना कोई मां है न ही बाप है अर्थात मैं इतने युगों से ही विराजमान हूं जिनकी कोई गिनती ही नहीं है तथा मैं अजन्मा व मृत्यु रहित हूं क्योंकि मेरे मां-बाप ही नहीं हैं।

मैं माया, छाया रूप व निशान आदि से रहित, अंदर बाहर से परे, अगम्य और अवर्णनीय हूं अर्थात न मेरे कोई माया जैसी चीज है न ही मैं छाया रूपी हूं न मेरा कोई रूप है न ही कोई आकृति है यानी मैं इन सब से रहित हूं तथा बाहर भीतर अगम्य हूं यानी अपरंपार हूं जिसका कोई लेखा ही नहीं है।६

भगवीं टोपी थल शिर आयो, हेत मिलाण करीलो।

अंबाराय बधाई बाजै, हृदै हरी सिंवरीलो।

गुरु महाराज अपने बारे में बतला रहे हैं कि सब कुछ मेरा ही किया हुआ खेल है। भगवी टोपी पहन कर आया हूं। यदि कोई प्रेम पूर्वक मिलना चाहता है तो मिल लो इस त्रिभुवन में बधाई बाजे बज रहे हैं अपने हृदय में अंतरात्मा में उस परमपिता परमात्मा का भजन कर लो अर्थात हे संसार के लोगों! वह स्वयं हरी निरंजन भगवे वेश में सम्भराथल धोरे पर विराजमान हैं है यदि आप प्रेम पूर्वक आकर अपने त्रिभुवन रूपी अंबर में अपनी अंत: आत्मा से मुझसे मिलोगे, देखोगे जानोगे तो तुम्हें उनबाजों का भी अहसास हो जाएगा कि उस लोक में क्या कुछ हो रहा है।

मोरै धरती ध्यान वनस्पति बासो,ओजू मंडल छायों।

गींदूं मेर पगाणै परबत, है मनसा सोड़ तुलायों।

मेरा ध्यान धरती रूप अडिग होकर वनस्पति रूप में सर्वत्र व्यापक है तथा परम तत्व रूप से संपूर्ण मंडल में छाया हुआ है। यह सुमेरु पर्वत मेरा तकिया है तथा यह छोटे-मोटे पर्वत पगाथियें हैं तथा यह इच्छा रजाई है अर्थात मुझे सांसारिक चीजों की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि मेरु पर्वत तो मेरा तकिया है तथा यह छोटे-मोटे पहाड़ ये मेरे पैरों के नीचे का गद्दा है तथा मनसा रूप रजाई है क्योंकि यह धरती वनस्पति व आकाश यानी सारी सृष्टि ही मेरा बसेरा है।

ऐ जुग चार छत्तीसाऔर छत्तीसा, आश्रा बहै अंधारी । म्हे तो खड़ा बिहायो ।

तेतीसां की बरग बहां म्हे, बारा काजै आयो। बारा थाप घणां न ठाहर।

सतयुग, त्रेता युग ,द्वापर युग, और कलियुग यह चारों युग छत्तीस बार बीत चुके हैं तथा कितने ही छत्तीसों युग अंधकार के सहारे बीते हैं पर हम स्थिर हैं। जो तैंतीस करोड़ जीवों की जो बारग थी उनमें से बारह करोड़ जीवों के उद्धार करने के लिए मैं आया हूं तथा बारह करोड़ जीवों के उद्धार के बाद मैं ज्यादा नहीं ठहरूंगा। अर्थात सतयुग में मैंने प्रह्लाद को जो वचन दिया था कि तेरे बाड़े के जो तैंतीस करोड़ जीव हैं वह इस भवसागर से पार हो जाएंगे। उनमें से इक्कीस करोड़ तो पार हो गए पर बारह करोड़ जीवों के उद्धार के लिए मैं आया हूं तथा उसके बाद में नहीं रुकूंगा।७

भगवान श्री कृष्ण ने गीता में अर्जुन से अपने विषय में कहा-

बहूनि मे व्यतीतानी जन्मानि चार्जुन परन्तप।

तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप।

हे परंतप अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं उन सबको तू नहीं जानता किंतु मैं जानता हूं।

अजोडपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोडपि सन्।

प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया।

मैं अजन्मा और अविनाशी स्वरूप होते हुए भी तथा समस्त प्राणियों का ईश्वर होते हुए भी अपनी प्रकृति को अधीन करके अपनी योग माया से प्रकट होता हूं।८

जिस प्रकार भगवान श्री कृष्ण ने अपने विषय में अर्जुन को बताया उसी प्रकार गुरु जंभेश्वर जी भी प्रारंभ से ही अपने विषय में बता रहे हैं।

म्हे अवधू निरपख जोगी, सहज नगर का रायों।

जो ज्यूं आवै सो त्यूं थरपां,

साचा सूं सत भायो।

शब्द संख्या 29 में गुरु जांभोजी कहते हैं-हम तो अवधूत निष्पक्ष योगी है। सहज स्वरूप का राजा हूं तथा मेरे पास जो भी कोई जिस भाव से आता है उसका वैसा ही मनोरथ पूरा करता हूं तथा सत्य पुरुष हूं उनसे मैं सत्य भाव ही रखता हूं अर्थात हम कोई पक्षपात न करते हुए भावना अनुसार ही फल देते हैं तथा सत्य मुझे बड़ा ही प्रिया है।

म्हारे मन ही मुद्रा तन ही कंथा,जोग मारग सह लीयो।

सात शायर म्हें कुरलै कीयो, ना मैं पीया न रहिया तिसायों।

डाकण शाकण निंद्रा खुध्या, ये म्हारै तांबै कूप छिपायों।

मेरे मन में ही मुद्रा तथा मेरा तन कंथा है।मैं योग माया में निपुण हूं। सातों चक्रों का मैंने भेदन कर लिया है। इसलिए मैंने ना कुछ पिया है और ना ही मैं प्यासा हूं क्योंकि मैं ही अमृत रूप हूं अर्थात मूलाधार चक्र से ऊर्जा शक्ति का उधर्व गमन प्रारंभ करके सहस्रार तक पहुंचाना ही योग कहलाता है। आशा, तृष्णा, निंद्रा और भूख यह सब के सब मेरे बश में है अर्थात मुझे किसी प्रकार की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि सूर्य के सामने तो अंधकार भी छिप जाता है।

म्हारे मनहीं मुद्रा तन ही कंथा, जोग मारग से सहलियों। डाकण शाकण निंद्रा खुध्या, ये मेरे मूल न थीयों।

अर्थात मेरा मन ही मुद्रा है तथा यह शरीर कंथा है और योग मार्ग में मैं निपुण हूं। आशा ,तृष्णा, निद्रा तथा भूख यह सब मेरे मूल स्वरूप (परम तत्व)में नहीं है। अर्थात परम तत्व (अनादि विष्णु) स्वरुप है। वह उपरोक्त सभी से रहित है।९

ओउम सप्त पताले तिहूं त्रिलोके, चवदा भवने गगन गहीरे ।

बाहर भीतर सर्व निरंतर,

जहां चीन्हों तहां सोई।

मैं कहां रहता हूं यह सुनो! अतल ,वितल ,सुतल, तलाताल ,रसातल, पाताल, महाताल इन सातों पातालों में तथा भू: ,भुव: स्व: मह, जन तप, सत्यम् इन ऊपर के साथ लोकों में और स्वर्ग ,मृत्यु ब्रह्मलोक इनमें भी नित्य निरंतर विद्यमान रहता हूं। और निराकार ,आकाश, जल, परिपूर्ण समुद्र में भी मेरा निवास है। बाह्य दृष्ट अदृष्ट संसार तथा भीतर के अंतर कारण में भी में सभी समय में लगातार ही रहता हूं। जहां पर भी याद करोगे, खोजोगे, वहीं पर ही में सदा ही प्राप्त हूं।१०

शब्द संख्या 46 में गुरु जंभेश्वर जी कहते हैं-

हम ही रावल हम ही जोगी, हम राजा के रायों।

जो ज्यूं आवै सो त्यूं थरपां, सांचा सूं सत भायों।

मैं ही रावल हूं, मैं ही योगी हूं तथा मैं ही राजाओं का राजा भी हूं इसलिए मेरे यहां सभी वर्गों के लोग आते हैं। जो भी जिस विचार भावना, कार्य, शंका को लेकर आता है मैं उसको उसकी ही भाषा, शैली काल अनुसार वैसा ही ज्ञान, उपदेश ,धन- दौलत ,सुख, शांति प्रदान करता हूं। मैं ही राजाओं का भी राजा हूं। योगियों का भी शिरोमणि योगी हूं। मेरे पास सभी कुछ विद्यमान है तथा मुक्त हाथों से

वितरण भी करता हूं। किंतु जो सच्चे लोग हैं वह मुझे अति प्रिय है। उन्हें मैं सांसारिक सुख शांति के अतिरिक्त मोक्ष भी देता हूं जो दूसरों के लिए अति दुर्लभ है।११

ओउम् श्री गढ़ आल मोत पुर पाटण भुय नागोरी ।

म्हें उंडे नीरे अवतार लीयो।

अठगी ठंगण।अदगी दागण।अगजा गंजण।ऊंनथ नाथन। अनूं नवावन।

काहिं को खैकाल कीयों।

काहीं सुरग मुरादे देसां काहीं दोरै दीयूं।।

गुरु जंभेश्वर जी कहते हैं- हमने इस नागौर की भूमि में गहरे पानी की भांति अवतार लिया है तथा हम उस परमधाम से मृत्यु लोक में आए हैं अर्थात् हमने उस परम धाम गढ़ नागौर नगर की भूमि में गहरे पानी की भांति ज्ञान रूप में अवतार लिया है। जो पाखंड के बल पर दूसरों को ठगने का कार्य करते हैं, जिन्होंने धर्म पर दाग लगाने जैसा कार्य किया है तथा अपने झूठे पाखंडमय धर्म मार्ग को ही अपने स्वार्थ के लिए सत्य बतलाते हैं, ऐसे लोग जो उद्दंडता से अपनी इच्छा से अभिमान में जकड़े हुए नम्रता व शीलता को न जानते हुए किसी के आगे शीश झुकाना नहीं जानते, उनके मर्यादा रूपी नाथ डालने व नम्र तथा शीलवान बनाने के लिए हमने अवतार लिया है ।अर्थात अज्ञानियों को जगाने, दुष्टों को सुधारने और उद्दंडियों को सही रास्ते पर लाने, घमंडियों को भी विनम्र बनाने के लिए इस धरा धाम पर हमने अवतार लिया है। किसी को तो मैंने यहां नष्ट ही कर दिया,किसी को स्वर्ग व मोक्ष भी दिया है, किसी को नर्क भी दिया है। ये सब उनके कर्म अनुसार ही दिया है। अर्थात मैंने किसी को काल रूप में नष्ट किया है, किसी को स्वर्ग व मोक्ष दिया तथा किसी को नर्क की प्राप्ति भी करवाई है यानी सभी को उनके द्वारा किये गये कर्मों के अनुसार ही फल दिया है।

कुण जाणै म्हे देव कुदेवो।

कुण जाणै म्हे अलख अभेवों।।

कुण जाणै म्हे सुर नर देवों।

कुण जाणै म्हारा पहला भेवूं।।

कुण जाणैं म्हे ज्ञानी के ध्यानी। कुण जाणै म्हे केवल ज्ञानी।।

कुण जाणै म्हे ब्रह्मज्ञानी।

कुण जाणै म्हे ब्रह्मचारी।।

कुण जाणै म्हे अल्प अहारी।

कुण जाणै म्हे पुरुष क नारी।।

कुण जाणैं म्हे बाद बिबादी।

कुण जाणै म्हे लुब्ध सबादी।।

कुण जाणै म्हे जोगी कै भोगी।

कुण जाणै म्हे आप संयोगी।।

कुण जाणैं म्हे भावत भोगी।

कुण जाणैं म्हे लील पती।।

कुण जाणैं म्हे सूम क दाता।

कुण जाणैं म्हे सती कुसती।।

गुरु जंभेश्वर जी कहते हैं कि हम देव हैं या कु देव हैं कौन जानता है कि हम देवाधिदेव हैं कौन जानता है कि हम सुर हैं या नर हैं या साधारण देव हैं कौन ऐसा है जो हमारा अंत व आदि का भेद जान सके। अर्थात हमारे बारे में जानना किसी के बस की बात नहीं है।

कौन जानता है कि हम ज्ञानी हैं या ध्यानी हैं कौन जानता है कि हम केवल्य ज्ञानी हैं कौन जानता है कि हम ब्रह्म ज्ञानी हैं कौन जानता है कि हम ब्रह्मचारी हैं कौन जानता है कि हम अल्प आहारी हैं कौन जानता है कि हम पुरुष हैं या स्त्री हैं कौन जानता है कि हम वाद विवाद करने वाले हैं कौन जानता है कि हम स्वाद का भोग करने वाले स्वादी हैं कौन जानता है कि हम योगी या भोगी हैं कौन जानता है कि हम अपने आप में आप हैं कौन जानता है कि हम बिछुड़ने -मिलने वाले हैं या भाव रूप ग्रहण करने वाले हैं, कौन जानता है कि हम संसार के मालिक हैं कौन जानता है कि हम कंजूस या दाता हैं कौन जानता है कि हम सती है या कुसती हैं अर्थात हमारे बारे में कौन जानता है कि हम क्या हैं यानी हमारे बारे में कोई कुछ भी नहीं जानता कि हम क्या हैं?१२

ओउम् हरि कंकहड़ी मंडप मैड़ी ।
जहां हमारा बासा।।
चार चक नव दीप थरथरै।
जो आपो परकासूं ।।

यह जो हरी कंकहड़ी रूपी संजीव व मंडप मेड़ी निर्जीव वस्तु व स्थानों में मेरा वास है मेरी आत्म सत्ता यानि मेरे प्रकाश से ये चारों दिशाएं व नवद्वीप थर-थर कांपते हैं अर्थात इस सृष्टि में ऐसा कोई स्थान नहीं जहां मेरा बस न हो यानी ये हरि कंकहड़ी या ये मंडप मेड़ी है इन सबमें मेरा वास है यदि मैं अपना प्रकाश रूप प्रकट करूं तो ये चारों दिशाएं व नवद्वीप थर-थर कांपने लगेंगे।१३

ओम सहस्त्र नाम साईं भल शिंभू।
म्हे उपना आद मुरारी।।
जब मैं रह्यो निरालंभ होकर।
उतपति धंधुकारी।।

अनादि विष्णु एक है पर सृष्टि के स्वामी स्वयंभू के हजारों नाम हैं,हमारी उत्पत्ति पूर्व में विष्णु रूप में हुई। यानी हमने अपनी उत्पत्ति अपने आप एक से अनेक रूपों में की है। जब हम निराकार थे तब केवल धंधूकारू ही था।

तद म्हे रूप कियो मैनावतीयो, सत्यव्रत को ज्ञान उचारी।
तदम्हे रूप रच्यों कामठियो ,
तेतीसां की कोड़ हंकारी।
जब मैं रूप धरयो बाराही, पृथिवी दाढ़ चढ़ाई सारी।
नरसिंह रूप धर हरण्यकश्यप मारयो।
प्रहलादो रहियो शरण हमारी।।

जब मैंने मत्स्य रूप में अवतार लिया तो सत्यव्रत द्रविड़ेश्वर को ज्ञान का उपदेश दिया।फिर कच्छप रूप में तेंतीस करोड़ देवी- देवताओं को एकत्र करवाया अर्थात मत्स्य रूप धारण करके सत्यव्रत को ज्ञान दिया तथा मैंने कछुए का रूप धारण करके सुमेरु पर्वत को अपनी पीठ पर थाम कर समुद्र मंथन में देवी देवताओं का सहयोग करते हुए सृष्टि को आगे बढ़ाया था।

वराह रूप धारण करके अपनी दाढ़ से पृथ्वी को रसातल में धंसने से बचाकर उसका उद्धार किया। नृसिंह रूप धारण करके हिरण्यकश्यप को मारा तथा प्रहलाद की रक्षा की।

बामन होय बलिराज चितायो। तीन पैंड कीबी धरसारी।
परशुराम हो क्षत्रिय पन साध्यो।
गर्भ न छूटो नारी।।
श्री राम शिरमुकुट बंधायो।
सीता के अहंकारी।।
कन्हड़ होय कर बंसी बजाई गऊ चराई ।

धरती छेदी काली नाथ्यों। असुर मार किया क्षयकारी।।१४

राजा बलि को वामन रूप धारण कर चेताया था तथा तीन पांव में सारा ब्रह्मांड नापा था।परशुराम रूप में अवतार लेकर मैंने क्षत्रियों का संहार किया था । संहार भी ऐसा किया कि क्षत्राणियों के गर्भ में ही शिशु नष्ट हो गए थे।

श्री राम रूप में सिर पर ताज पहना तथा सीता के साथ स्वयंवर रचाया था। श्री कृष्ण अवतार में बंसी बजाई, गाय चराईं, धरती को मुक्त करवाया, वासुकि नाग को नाथा तथा असुरों का संहार किया।

बुद्ध रूप गयासुर मारयो। काफर मार किया बेगारी।।
पंथ चलायो राह दिखायो। नौवर विजय हुई हमारी।।
शेष जंभराय आप अपरंपर।
अवल दीन से कहियो।
जांभा गोरख गुरु अपारा।।
काजी मुल्ला पढिया पंडित।
निंदा करै गवारा।।१५

गुरु महाराज कहते हैं बुद्ध रूप में अवतार लेकर मैंने गयासुर सहित अनेक दुष्टों का संहार कर धर्म की स्थापना की तथा सच्चा मार्ग प्रशस्त किया। इस प्रकार नौ बार हमने विजय प्राप्त की। शेष कार्यों को पूरा करने के लिए जंभराय नाम से स्वयं अपरंपर विष्णु परमात्मा यहां आया हूं तथा आदि अनादि से ही अर्थात प्रथम दिन से ही निराकार कहा जाने वाला हूं। गुरुओं में मैं गुरु गोरखनाथ की भांति अपार हूं ।जबकि काजी मुल्ला पद-लिखे पंडित लोग हमारी निंदा करते हैं वह गवार है मूर्ख हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार गुरु जंभेश्वर जी ने जंभवाणी, सबदवाणी में जो कुछ भी कहा वह संपूर्ण विश्व के कल्याण को ध्यान में रखते हुए कहा।' एकाकी न रमते' "एकोडमं बहुस्यां प्रजायेय"उस पर ब्रह्म के मन में इच्छा हुई कि कुछ खेल खेला जाए, इसलिए स्वयं ही स्वकीय इच्छा से माया की उत्पत्ति की तथा माया से आगे सृष्टि का विस्तार किया। इसलिए उस परमपिता परमात्मा की सत्ता कण-कण में विद्यमान है। उन्होंने अपने विषय में इतना कुछ बताया कि हम उनके बताये मार्ग का अनुसरण कर अपना व संपूर्ण सृष्टि का कल्याण कर सकते हैं। उन्होंने शब्द संख्या 96 में कहा -

ओउम सुण गुणवंता। सुण बुधवंता ।। मेरी उत्पत्ति आद लुहारूं।।

हे गुणवान ! हे बुद्धिमान! सुन! मेरी आदि उत्पत्ति के बारे में सुन, मैं सृष्टि से भी पहले का कार्यकर्ता हूं। अर्थात जंभेश्वर जी ने अपने आप को लुहार रूप में संबोधित करते हुए कहा कि मैं, मेरी उत्पत्ति आदि लुहार के रूप में है।

संदर्भ सूची

[1]. आचार्य कृष्णानंद 2022 सबदवाणी, जांभाणी साहित्य अकादमी, जय नारायण व्यास कॉलोनी बीकानेर, राजस्थान
[2]. आचार्य कृष्णानंद 2013 जम्भसागर, जांभाणी साहित्य अकादमी, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर, राजस्थान
[3]. आचार्य कृष्णानंद 2013 जम्भसागर, जांभाणी साहित्य अकादमी, जय नारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर, राजस्थान
[4]. आचार्य कृष्णानंद 2013 जम्भसागर जांभाणी साहित्य अकादमी, जयनारायण व्यास कॉलोनी बीकानेर, राजस्थान
[5]. आचार्य कृष्णानंद 2013 जम्भसागर, जांभाणी साहित्य अकादमी, जय नारायण व्यास कॉलोनी बीकानेर, राजस्थान
[6]. बिश्नोई पृथ्वी सिंह धतरवाल 2013 जंभ शब्दवाणी सार श्री गुरु जंभ साधना फतेहाबाद, हरियाणा
[7]. बिश्नोई पृथ्वी सिंह धतरवाल 2013 जंभ शब्दवाणी सार श्री गुरु जंभ साधना फतेहाबाद, हरियाणा
[8]. गीता श्रीमद्भागवत संवत 2068 गीता प्रेस गोरखपुर
[9]. बिश्नोई पृथ्वीसिंह धतरवाल 2013 जंभ शब्दवाणी सार, श्री गुरु जम्भ साधना फतेहाबाद, हरियाणा

[10]. आचार्य कृष्णानंद 2013 जम्भ सागर जांभाणी साहित्य अकादमी जय नारायण व्यास कॉलोनी बीकानेर, राजस्थान

[11]. आचार्य कृष्णानंद 2013 जम्भ सागर जांभाणी साहित्य अकादमी, जय नारायण व्यास कॉलोनी बीकानेर, राजस्थान

[12]. बिश्नोई पृथ्वी सिंह धतरवाल 2013 जम्भ शब्दवाणी सार श्री गुरु जंभ साधना फतेहाबाद, हरियाणा

[13]. बिश्नोई पृथ्वी सिंह धतरवाल 2013 जम्भ शब्दवाणी सार श्री गुरु जम्भ साधना फतेहाबाद, हरियाणा

[14]. बिश्नोई पृथ्वी सिंह धतरवाल 2013 जम्भ शब्दवाणी सार श्री गुरु जम्भ साधना फतेहाबाद,हरियाणा

[15]. भादू छोटू राम सबदवाणी सहदेव काली राणा बिश्नोई सभा हिसार।

Cite this Article

*डॉ छाया रानी, **"जंभवाणी में गुरु जंभेश्वर जी के आत्मविषयक कथन"**, International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 3, Issue 11, pp. 41-48, November 2025.*

***Journal URL:** https://ijmrast.com/*

***DOI:** https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i11.200*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.